ॐ नमो भगवते श्री गोपीनाथाय

प्रातः आराधना

जगद्गुरु भगवान् गोपीनाथ जी
जन्म-शताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर
हार्दिक बधाई तथा शुभ कामनाएं

3-7-1998
(सूर्य संचार)
6-7-1998
(चन्द्र संचार)
आषाढ़ शुक्ल द्वादशी

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

भगवन्तं गोपीनाथं शरणं गच्छामि
श्री चरण का जय जयकार

श्री गुरुशरणम्	सत्गुरस शरण
निजं प्राणनाथं श्री सद्गुरुं तं।	निज प्राणनाथस श्री सद्गुरुस बा।
सच्चित्स्वरूपं शरणं व्रजामि।।	सत्-च्यत् स्वरूपस शरणय गछ़ानछुस।।
यो मुक्तिदाता भवरोगत्राता।	युस मुक्तिदाता भवरूगत्राता।
तं शक्तिमान्तं शरणं व्रजामि।।	तस शक्तिमानस शरण्य गछ़ानछुस।।
रात्रौ प्रभाते मध्याह्नकाले।	रातस प्रभातस मध्यान कालस।
हृदयस्थभानुं शरणं व्रजामि।।	हृदयस्थसिरियस शरण्य गछ़ानछुस।।

स्वर्गीय श्री जानकीनाथ कौल
'कमल'

श्री गुरु महाराज की मूर्ति के सामने जाकर पहले चरण कमलों का ध्यान करें जो श्वेत होने के साथ-२ लालिमा लिए हुए हैं। फिर नाभिस्थान का ध्यान करें जो मोटी ड़ोरी पहने हुए है। इसके पश्चात् मस्तिष्क, जहाँ थोडी ऊँचाई के बाल तथा चोटी हैं, का ध्यान करें। फिर सीधे खडे होने की चेष्टा करें।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ॐ श्री गणेशाय नमो नमः

1 ॐ शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।।

2 अभिप्रेतार्थ-सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः।।

3 गुरुर् ब्रह्मा गुरुर् विष्णु गुरुः साक्षात् महेश्वरः।
गुरुर् एव जगत् सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

4 अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

5 अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षुर उन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

6 नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिव-रूपिणम्।
शिरसा योग-पीठस्थं धर्म-कामार्थ-सिद्धये।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

श्री भगवते गोपीनाथाय ते नमः

1. भक्तमानसहंसाय व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणे।
गुरवे शिवरूपाय गोपीनाथाय ते नमः।।

हे भगवान् गोपीनाथ जी! आप भक्तों के मनरूपी मानसरोवर के राजहंस हो, प्रकट रूप से सबों को दिखने वाले हो और अप्रकट रूप से भी सबों को देखने वाले हो, सदगुरु के रूप में आप भगवान शंकर के ही रूप को धारण करने वाले हो, ऐसे आप को हमारा नमस्कार हो।

राजहंस कैलाश पर्वत पर विद्यमान मानसरोवर में ही सदा वास करते हैं। इनकी विशेषता यह है कि ये रत्नों को ही चुन चुनकर खाते हैं तथा दूध में से केवल दूध के अंश को पीकर पानी के अंश को छोड़ फेंकते हैं।

सद्गुरु महाराज राजहंस हैं और भक्तों का मन मानसरोवर है।

2. अनुन्तराय भद्राय सर्वसौभाग्य दायिने।
नानारूपाय वीराय शिवाय गुरवे नमः।।

हे सदगुरु महाराज! आप अनुन्तर हैं अर्थात् आपकी तुलना में कोई दूसरा नहीं है अथवा आप वर्णन करने के अयोग्य हैं, आप कल्याण स्वरूप हैं, आप प्रत्येक प्रकार की वृद्धि अर्थात आत्मिक भौतिक और दैहिक उन्नति को प्रदान करने वाले हैं, आप अनेक रूपों वाले हैं, आप वीर हैं अर्थात अपनी सारी इन्द्रियों पर आपने विजय प्राप्त की है ऐसे शिवरूप (कल्याण स्वरूप) आप गुरु महाराज को हमारा नमस्कार हो।।

अनुन्तर शब्द कश्मीर शैव दर्शन का पारिभाषिक शब्द है जिसकी व्याख्या 'परात्रिंशिका' शास्त्र में आचार्य अभिनवगुप्त ने सोलह भिन्न-भिन्न अर्थों में की है। यह शब्द सारे शैवशास्त्र का सार है।

3. ध्येयाय, ध्यानगम्याय सर्वदाय सुखासिने।
स्वतन्त्राय दयार्द्राय शिवाय गुरवे नमः।।

हे भगवान् गोपीनाथ जी! आप ध्यान करने के योग्य हैं, आप ध्यान के द्वारा ही जानने योग्य हैं, आप सब कुछ देने वाले हैं, आप सुख से आसन पर

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

विराजमान हैं, आप किसी के अधीन न होने से प्रत्येक कार्य करने या न करने या अन्यथा करने के लिए स्वतन्त्र हैं, अपने आश्रितों के दुःख को देख कर आप दया से पसीज उठते हैं, ऐसे शिवरूप आप गुरु महाराज को हमारा प्रणाम हो।।

4. महौजस्काय चण्डाय मूलविग्रहरूपिणे।
स्वात्मारामाय रामाय शिवाय गुरवे नमः।।

हे भगवान् गोपीनाथ जी! आप अतीव प्रकाशशाली या तेजस्वी हैं, आप अतीव प्रचण्ड क्रोध स्वभाव वाले हैं, आप आदि शरीरधारी हैं, आप अपने ही स्वरूप में सदा विहार करने वाले हैं अर्थात सदा स्वात्मस्वरूप निष्ठ हैं, आप समस्त प्राणियों के अन्तः करणों में रमण करने वाले हैं, ऐसे शिवरूप आप गुरुमहाराज को हमारा प्रणाम हो।

5. कार्यकारणमुक्ताय प्रबलाय सुहासिने।
अजाय गगनस्थाय शिवाय गुरवे नमः।।

हे भगवान् जी! आप कार्य (effect) और कारण (cause) से रहित हैं, आप अतीव बलशाली हैं, आप सदा मन्द मुस्कान से मोहित करने वाले हैं, आप जन्म रहित हैं, आप शून्य में अर्थात शून्यावस्था में प्रतिष्ठित हैं, ऐसे शिवरूप आप गुरु महाराज को हमारा प्रणाम हो।

गगन शून्य का प्रतीक है।

"अजाय" से तात्पर्य है न जायते म्रियते वा कदाचित्।

6. यज्ञरूपाय देवाय शितशूलकराय वै।
धमत् धूम्राय कालाय शिवाय गुरवे नमः।।

हे भगवान् गोपीनाथ जी! आप यज्ञस्वरूप हैं अर्थात जो कुछ हम यज्ञ या हवन आदि देवसम्बन्धी क्रिया करते हैं वह तो आप ही हैं, आप यज्ञ के अभीष्ट देवता हैं, आप सदा तेज नोक वाली त्रिशूल जैसी चिमटी को हाथ में धारण करने वाले हैं, आप काले धुएं को मुख से उगलते हुए महाकाल–स्वरूप हैं (स्मरण रहे

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कि भगवान जी सदा चिलम को मूंह से लगाये धुआं फूंकते रहते थे) ऐसे शिवरूप आप गुरु महाराज को हमारा प्रणाम हो।।

7. व्योमकेशाय ईशाय नरविग्रह धारिणे।
प्रज्वलद्रम्य नेत्राय शिवाय गुरवे नमः।।

हे भगवान् गोपीनाथ जी! आप भगवान शंकर स्वरूप हो, आप मनुष्य शरीर धारण किये हुए भी सब कुछ करने में समर्थ हो, आप सदा समाधिनिष्ठ रहने के कारण चमकीले आकर्षक नेत्रों को धारण करते हो, ऐसे शिवरूप आप गुरु महाराज को हमारा प्रणाम हो।।

8. सदाशिव स्वरूपाय तत्त्वातीताय साक्षिणे।
अन्तस्थभावविज्ञाय गोपीनाथाय ते नमः।।

सदाशिव स्वरूप वाले, शैवदर्शन में वर्णित ३६ तत्वों से भी परे, जगत् व्यवहार के साक्षी बने हुए, प्रत्येक प्राणी के हृदयस्थित भावों को विशेषरूप से जानने वाले श्री गोपीनाथ जी महाराज को हमारा प्रणाम हो।।

9. प्रद्युम्नपीठ भक्ताय शारदादेशवासिने।
जगत् वन्द्याय दिव्याय गोपीनाथाय ते नमः।।

प्रद्युम्नपीठ अर्थात हारीपर्वत स्थित शारिका पीठ के जो श्री गोपनाथ 'बब' (पिता) महान भक्त थे, जो शारदा देश अर्थात कश्मीर देश के निवासी थे, जो संसार के सारे प्रणियों में वन्दनीय थे, और जो अलौकिक स्वर्गीय मूर्ति को धारण करने वाले थे, ऐसे श्री गोपीनाथ जी महाराज को हमारा प्रणाम हो।

प्रद्युम्नपीठ–स्मरण रहे कि भगवान गोपीनाथ जी प्रतिवर्ष हरि पर्वत के श्री चक्रेश्वर मन्दिर के नीचे देवी आंगण में प्रायः श्री रामजू (पुरोहित) के घर में, जो मन्दिर की सीढ़ियों के आस पास था, तथा जहां कमरे की खिड़कियों से माता मूर्ति सदा दृष्टि गोचर रहती थी, रहा करते थे और अहर्निश साधना में तल्लीन रहकर स्वात्मानन्द चमत्कार से चमत्कृत रहते थे।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

शारदादेश – कश्मीर भूमि का एक नाम शारदा देश या शारदा पीठ भी है। शारदा सरस्वती का दूसरा नाम है। कश्मीर सदा आचार्यों अलंकारिकों, साहित्यकारों, दार्शनिकों और विद्वानों का जन्मस्थान रहा है। पहिले घर-घर में यहां के नर और नारियां संस्कृत भाषा और प्राकृत भाषा का प्रयोग मातृभाषा के रूप में करती थीं। इसी कारण इस समय भी बनारस आदि प्रदेशों में विद्यारम्भ के समय बालक को कश्मीर देश, जो सरस्वती का उद्गम स्थान हैं, की ओर पहिले नमन करने की प्रथा विद्यमान है।।

10. निरंजनाय शान्ताय चिदेक रसरूपिणे।
परदेवाय सिद्धाय गोपीनाथाय ते नमः।।

हे गोपीनाथ जी! आप किसी भी मल अर्थात् आणव मल, मायीय मल, और कार्म मल से विहीन होने के कारण निर्मल हो, आप सदा शान्त स्वभाव में अधिष्ठित हो आप केवल चैतन्य रस में रंगे हुए हो, आप सर्वोत्तम देवस्वरूप हो और आप सिद्धयोगी हो, ऐसे आप को हमारा नमस्कार हो।।

सर्वरक्षाकरं एतत् कथितं दशकं मया।
श्री गोपीनाथस्य भक्तेन पिकेन ह्ययनुरोधतः।।
परमानन्दलाभार्थं श्री गोपीनाथं प्रपूजयेत्।
तस्याग्रे सर्वदा प्रातः पठितव्यं प्रयत्नतः।।

सारी विपत्तियों से रक्षा करने वाला यह स्तोत्र श्री गोपीनाथ 'बब' के एक दास ने भक्तों के अनुरोध पर बनाया। सारे भक्तों को चाहिए कि वे उनकी मूर्ति के सामने सदा प्रयत्न से इस स्तोत्र को प्रातः पढ़े और परम आनन्द की प्राप्ति के लिए श्री गोपीनाथ 'बब' की सावधान मन से पूजा करें।।

जय गुरुदेव।।

-प्रो. मक्खन लाल कुकिलू

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ओं श्रीगणेशाय नमः। ओं श्री गुरवे नमः।।

ओं अस्य श्रीगुरुगीतास्तोत्रमंत्रस्य श्रीसदाशिव ऋषिः, विराट् छन्दः, श्रीगुरुः गोपीनाथो देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सोहं कीलकं, श्रीगुरुप्रसादसिद्धयर्थं पाठे विनियोगः।

अथ न्यासः

ओं हं सां सूर्यात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः
ओं हं सीं सोमात्मने तर्जनीभ्यां नमः
ओं हं सूं निरञ्जनात्मने मध्यमाभ्यां नमः
ओं हं सैं निराभासात्मने अनामिकाभ्यां नमः
ओं हं सौं अतनुसूक्ष्मात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ओं हं सः अव्यक्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इति करन्यासः।

ओं हं सां सूर्यात्मने हृदयाय नमः
ओं हं सीं सोमात्मने शिरसे स्वाहा
ओं हं सूं निरञ्जनात्मने शिखायै वौषट्
ओं हं सैं निराभासात्मने कवचाय हुम्
ओं हं सौं अतनुसूक्ष्मात्मने नेत्रत्रयाय वौषट्
ओं हं सः अव्यक्तात्मने अस्त्राय फट्।

इति षडंगन्यासः।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ओं भूर्भुवः स्वरोम्। इति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्

हंसाभ्यां परिवृत्तपत्रकमलं दिव्यं जगत्कारणं
विश्वोत्तीर्णमनेकदेहनिलयं स्वशक्तिमात्मेच्छया।
तत्तत्स्यूतविभाविशिष्टममलं भावैकदीपं परं
प्रत्यक्षाक्षरविग्रहं गुरुवरं ध्याये विभुं शाश्वतम्।।

विश्वे व्यापिनमादिदेवममलं नित्यं परं निष्कलं
नित्योद्बुद्धसहस्रपत्रकमलैः लिप्याक्षरैः मंडितम्।
नित्यानन्दमयं सुखैकनिलयं सत्यं शिवं स्वप्रभं
ध्यायेदात्मस्वरूपविज्ञमचलं स्वातंत्र्यतः सर्वगम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ओं श्रीगणेशाय नमः। ओं श्री गुरवे नमः
अथ श्री गुरुगीता

1. वन्दे गुरुपद-द्वन्द्वं अवाङ्.-मनस-गोचरम्।
रक्त-शुक्ल-प्रभं उग्रं अप्रतर्क्यं परं महत्।।

2. अचिन्त्याव्यक्त-रूपाय निर्गुणाय महात्मने।
समस्त-जगद्-आधार-मूर्तये ब्रह्मणे नमः।।

ऋषय ऊचुः

3. गुह्याद् गुह्यतरा विद्या गुरुगीता विशेषतः।
त्वत् प्रसादात् च श्रोतव्या तत् सर्वं ब्रूहि सूत! नः।।

सूत उवाच

4. कैलास-शिखरे रम्ये भक्ति-साधन-हेतवे।
प्रणम्य पार्वती भक्त्या शंकरं पर्यपृच्छत।।

श्री पार्वती उवाच

5. ओं नमो देव-देवेश परात् पर जगद् गुरो।
सदाशिव महादेव गुरुदीक्षां प्रदेहि मे।।

6. केन मार्गेण भो स्वामिन् देही ब्रह्म-मयो भवेत्।
तत् कृपां कुरु मे स्वामिन् नमामि चरणौ तव।।

श्री शिव उवाच

7. मम रूपासि देवि त्वं त्वत् प्रीत्यर्थं वदाम्यहम्।
लोकोपकारकं प्रश्नं न कोपि कृतवान् पुरा।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

8. दुर्लभं त्रिषु लोकेषु तत् श्रुणुष्व वदाम्यहम्।
गुरुर् ब्रह्म विना नान्यः सत्यं सत्यं वरानने।।

9. यस्य देवे परा भक्तिः यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।।

10. गुकारस्त्वन्धकारः स्यात् रुकारस् तत् निरोधकः।
अन्धकार-निरोधित्वात् गुरुर् इत्यभिधीयते।।

11. गकारेण ह्युकारस्य योगस्तिमिर-वाचकः।
अन्धकार-विनाशित्वात् गुरुर् इत्यभिधीयते।।

12. वेद-शास्त्र-पुराणानि धर्म-शास्त्रादिकानि च।
मन्त्र-यन्त्राणि मीमांसा स्मृतीर् उच्चाटनादिकम्।।

13. न्याय-विस्तार-कल्पादि चेतिहासादिकं तथा।
गुरोः कृपां विना कश्चित् न प्राप्नोति कदाचन।।

14. यद् अंघ्रि-कमल-द्वन्द्वं द्वन्द्व-ताप-निवारकम्।
तारकं भव-सिन्धोश्च श्रीगुरुं प्रणमाम्यहम्।।

15. वेद-शास्त्र-पुराणानि जानाति कृपया गुरोः।
अतो लोके गुरुः साक्षात् वर्तते वेद-तत्त्व-वित्।।

16. शैव-शाक्तागमादीनि तथान्ये बहवो मताः।
अपभ्रंशः समस्तानां जीवानां भ्रान्त-चेतसाम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

17. यज्ञो व्रतं तपो दानं जपस् तीर्थं तथैव च।
गुरोस् तत्त्वं अविज्ञाय समग्रं निष्फलं भवेत्।।

18. गुरोः ज्ञानात्मनो नान्यत् तत्वं सत्यं न संशयः।
तत् लाभार्थं प्रयत्नस्तु कर्तव्यः सुमनीषिभिः।।

19. देवि! ब्रह्म भवेत् देही त्वत् कृपार्थं वदाम्यहम्।
सर्व-पाप-विशुद्धात्मा श्रीगुरोः पाद-सेवनात्।।

20. काले तीर्थावगाहस्य संप्राप्नोति फलं नरः।
गुरोः पादोदकं पीत्वा शेषं शिरसि धारयेत्।।

21. शोषणं पाप-पङ्कस्य दीपनं ज्ञान-चेतसाम्।
गुरोः पादोदकं पेयं संसारार्णव-तारणम्।।

22. अज्ञान-मूल-हरणं जन्म-कर्म-निवारणम्।
ज्ञान-वैराग्य सिद्ध्यर्थं गुरोः पादोदकं पिवेत्।।

23. गुरोः पादोदक-पानं गुरोर् उच्छिष्ट-भोजनम्।
गुरोर् मूर्तेः सदा ध्यानं गुरोस्तोत्रं सदा जपेत्।।

24. काशीक्षेत्रे निवासश्च जाह्नवी चरणोदकम्।
गुरुर् विश्वेश्वरः साक्षात् तारकः ब्रह्म-वाचकः।।

25. गुरोः क्षेत्रे निवासश्च गुरोः पादाङ्किता धरा।
तीर्थराजः प्रयागोसौ गुरु-मूर्त्यै नमो नमः।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

26. गुरोर् मूर्तिं स्मरेत् नित्यं गुरोर् नाम सदा जपेत्।
गुरोर् आज्ञां प्रकुर्वीत गुरोर् मंत्रं विभावयेत्।।

27. गुरोर् वक्त्रे स्थितं ब्रह्म प्राप्यते तत् प्रसादतः।
गुरोर् मूर्तेः सदा ध्यानं नारी पतिव्रता यथा।।

28. स्वाश्रमं च स्वजातिं च स्वकीर्तिं पुष्टि-वर्धनम्।
अन्यत् सर्वं परित्यज्य गुरु-रत्नं विभावयेत्।।

29. गुरुं चिन्तयतां पुँसां सुलभं परमं सुखम्।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन गुरोर् आराधनं कुरु।।

30 गुरोर् वक्त्रे स्थिता विद्या गुरु-भक्त्या च लभ्यते।
त्रैलोक्ये स्फुट-वक्तारो देवाद्याः सुर-पन्नगाः।।

31. गुकारस्त्वन्धकारोस्ति रुकारस्तद् विनाशकः।
अज्ञान-ग्रासकं ब्रह्म गुरुर् एव न संशयः।।

32. गुकारः प्रथमो वर्णो मायादि गुण-भासकः।
रुकारो द्वितीयो ब्रह्म माया-भ्रांन्ति-विमोचकः।।

33. एवं गुरु-पदं श्रेष्ठं देवानां अपि दुर्लभम्।।
हाहा-हूहू-गणैश्चैव गन्धर्वाद्यैश्च पूज्यते।।

34. ध्रुवं तेषां च सर्वेषां नास्ति तत्वं गुरोः परम्।
आसनं शयनं वस्त्रं वाहनं भूषणादिकम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

35. साधकेन प्रदातव्यं गुरोः सन्तोष-कारणम्।
गुरोर् आराधनं कार्यं यत् प्रियं तत् निवेदयेत्।।

36. आत्म-दारादिकं चैव सद्-गुरुभ्यो निवेदयेत्।
कृमि-कीट-भस्म-विष्टा-दुर्गन्ध-मल-मूत्रकम्।।

37. श्लेष्मा-रक्त-वसा-चर्म तत् क्षेत्रं च वरानने।
देहाभिमानिनो मूढ़ाः पतन्ति नकार्णवे।।

38. शरीरं अर्थं सर्वस्वं सद् गुरुभ्यो निवेदयेत्।
येनोद्धृतं इदं सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।

39. गुरुर् ब्रह्मा गुरुर् विष्णुः गुरुः देवो महेश्वरः।
गुरुर् एव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।

40. गुरुः माता पिता चैव गुरुर् देवो हि बान्धवः।
गुरोर् देवात् परं नान्यत् तस्मै श्री गुरवे नमः।।

41. हेतवे जगतां एव संसारार्णव-तारणे।
प्रभवे सर्व-विद्यानां शम्भवे गुरवे नमः।।

42. अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन-शलाकया।
चक्षुर् उन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

43. अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

44. स पिता स च मे माता स बन्धुः स च देवता।
संसार-प्रतिबोधार्थं तस्मै श्री गुरवे नमः।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

45. यत् सत्येन जगत् सत्यं यत् प्रकाशेन भाति तत्।
यद् आनन्देन वोदेति तस्मै श्री गुरवे नमः।।

46. यस्मिन् स्थितं इदं सर्वं यद् भानाद् भाति चैव यत्।
यत् प्रियात् प्रिय पुत्रादि तस्मै श्री गुरवे नमः।।

47. येन चिन्तयते देही चित्तं चेतयते यतः।
जाग्रत् स्वप्न-सुषुप्त्यादि तस्मै श्री गुरवे नमः।।

48. यस्य ज्ञानं इदं विश्वं न दृश्यं भिन्न-भावतः।
सदैक-रूप-रूपाय तस्मै श्री गुरवे नमः।।

49. यस्य मन्त्रं तस्य मन्त्रं मन्त्रं यस्य महात्मनः।
अनन्य-भाव-भावाय तस्मै श्री गुरवे नमः।।

50. यस्य कारण-रूपस्य कार्य-रूपेण भाति यः।
कार्य-कारणतां एति तस्मै श्री गुरवे नमः।।

51. नाना-रूपं इदं विश्वं न केनाप्यस्ति भिन्नता।
कार्य-कारणतां एति तस्मै श्री गुरवे नमः।।

52. शिवः क्रुद्धो गुरुस् त्राता गुरुः क्रुद्धो शिवो न हि।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन श्री गुरुं शरणं व्रजेत्।।

53. वन्दे गुरु-पद-द्वन्द्वं वाङ्-मनोतीत-गोचरम्।
श्वेत-रक्त-प्रभा-युक्तं शिव-योगात्मकं परम्।।

54. गुकारं तु गुणातीतं रुकारं रूप-वर्जितम्।
गुणातीत-स्वरूपं च यो दद्यात् स गुरुः स्मृतः।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

55. अत्रि-नेत्रोद्भव-शीतः चतुर्बाहुस्-त्रिलोचनः।
यः चतुर् वदनो ब्रह्मा श्री गुरुः कथितः प्रिये।।

56. अयं मयाञ्जलिः बद्धो दया-सागर ! वृद्धये।
भवत्-चानुग्रहो भूयात् घोर-संसार-मुक्तये।।

57. श्री गुरोः परमं रूपं विवेक-चक्षुषोऽग्रतः।
मन्द-भाग्याः न पश्यन्ति ह्यन्धाः सूर्योदयं यथा।।

58. श्रीनाथ-चरण-द्वन्द्वं यस्यां दिशि विराजते।
तस्यां दिशि नमस् कुर्याद् भक्त्या प्रतिदिनं प्रिये।।

59. तस्यां दिशि सतत प्राञ्जलिः मन्त्र-पुष्पान्
संप्रक्षिपेत् सुख-करान् च द्विरेफ-युक्तान्।
जागर्ति यत्र भगवान् गुरु-चक्रवर्ती
विश्वोदय-प्रलय-नाटक-नित्य-साक्षी।।

60. सात्विकादि गुणैः प्रशस्त-विभवैः
व्याधि-हरैः दुष्करैः
प्राणायाम-शतैर् महेश्वर-पदं
न प्राप्यते मानवैः।
यत्-कारुण्य-लवेन प्राण-महतो
यत्तः स्वयं तत् क्षणात्
सेव्यः स परमार्थ-चिन्तन-परो
वेदार्थ-वित् श्रीगुरुः।।

61. गुरुर् देवो जगत् सर्वं ब्रह्मा-विष्णु-शिवात्मकः।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात् संपूजयेद् गुरुम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

62. सर्व-श्रुति-शिरो-रत्न-विराजित-पदाम्बुजः।
वेदान्ताम्बुज-सूर्याय तस्मै श्री गुरवे नमः।।

63. यस्मात् परतरं नान्यत् अस्ति किञ्चित् जगत् त्रये।
मनसा वचसा ध्येयः तस्मै श्री गुरवे नमः।।

64. गुरु-देव-प्रसादेन ब्रह्मा-विष्णु-हरादिषु।
सामर्थ्यं प्राप्यते शिष्यैर् मोक्षस् तत् सेवया ध्रुवम्।।

65. ज्ञानी कर्मी तथा योगी गुरुर् ज्ञेयः सुख-प्रदः।
त्रिभिः हीनं त्यजेत् दूरे मिथ्या-ज्ञान-प्रदर्शकम्।।

66. यस्य स्मरण-मात्रेण ज्ञानं उत्पद्यते स्वयम्।
ज्ञान-शेवधि-दात्रे वै तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

67. देव-किन्नर-गन्धर्वाः पितृ-यक्षाश्च चारणाः।
मुनयोपि न जानन्ति गुरु-शुश्रूषणा-विधिम्।।

68. ऋषयो नाग-सिद्धाश्च गुरु-सेवा-पराङ्.मुखाः।
महाहंकार-संयुक्तास् तपो-विद्या-बलान्विताः।।

69. संसार-कुहरावर्ते घटीयन्त्रे यथा घटाः।
उपर्यधः भ्रमन्ते ते मुच्यन्ते न भवार्णवात्।।

70. ध्यानं श्रृणु महादेवि सर्वानन्द-प्रदायकम्।
सर्व-सौख्य-करं चैव भुक्ति-मुक्ति-प्रदायकम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

71. स्वदैशिकस्यैव शरीर-चिन्तनं
भवेत् अनन्तस्य शिवस्य चिन्तनं।
स्वदैशिकस्यैव च नाम-कीर्तनं
भवेत् अनन्तस्य शिवस्य कीर्तनम्।।

72. श्रीमत् परंब्रह्म गुरुं वदामि
श्रीमत् परं ब्रह्म गुरुं भजामि।
श्रीमत् परं ब्रह्म गुरुं स्मरामि
श्रीमत् परं ब्रह्म गुरुं नमामि।।

73. ब्रह्मानन्दं परम-सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगन-सदृशं तत् त्वं अस्यादि लक्ष्यम।
एकं नित्यं विमलं अचलं सर्वदा साक्षि-भूतं
भावातीतं त्रिगुण-रहितं सद् गुरुं तं नमामि।।

74. आनन्दं आनन्द-करं प्रसन्नं
ज्ञान-स्वरूपं निज-बोध-युक्तम्।
योगीन्द्रं ईड्यं भव-रोग-वैद्यं
श्रीसद् गुरुं नित्यं अहं नमामि।।

75. हृद्-अंम्बुजे कर्णिका-मध्य-संस्थे
सिंहासने-संस्थित-दिव्य-मूर्तिम्।
ध्यायेद् गुरुं चन्द्र-कलावतंसं
सत्-चित्-सुखाभीष्ट-वरं ददानम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

76. श्वेताम्बरं श्वेत-विलेप-पुष्पं
मुक्ता-विभूषं मुदितं द्विनेत्रम्।
वामाङ्ग-पीठे-स्थित-दिव्य-शक्तिं
मन्द-स्मितं शान्ति-कृपा-निधानम्।।

77. यस्मिन् सृष्टि-स्थिति-ध्वंस-पिधानानुग्रहात्मकम्।
कृत्यं पंच-विधं शश्वद् भासते तं नमाम्यहम्।।

78. यत् पाद-रेणुभिर् नित्यं भक्ताः संसार-वारिधेः।
सेतुं बध्नन्ति वै सम्यक् दैशिकं तं उपास्महे।।

79. प्रातः शिरसि शुक्लेब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुम्।
वराभय-करं शान्तं स्मरेत् तं नाम-पूर्वकम्।।

80. नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निरञ्जनम्।
नित्य-बोधं चिद् आनन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम्।।

81. यद् आदिस्थं च संसार-वृक्ष-बीजं अनश्वरम्।
ब्रह्मरन्ध्र-सिताम्बोज-मध्यस्थं चन्द्र-मंडलम्।।

82. आकाशे दिव्य-रेखांतः सहस्रदल-मंडिते।
हंस-रूपे त्रिकोणे च स्मरेत् तं मध्यतो गुरुम्।।

83. सकल-भुवन-दृष्टिः कल्पिताशेष-दृष्टिः
अक्षगण-परमेष्टिः तत्परार्थैक-दृष्टिः।
निखिल-शमन-दृष्टिः सम्पदार्थैक-दृष्टिः
भवगण-परमेष्टिः मेरु-सारैक-दृष्टिः।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

84. न गुरोर् अधिकं न गुरोर् अधिकः
न गुरोर् अधिकं न गुरोर् अधिकः।
मम शासनतो मम शासनतः
मम शासनतो मम शासनतः।।

85. इदं एव शिवं अयं एव शिवः
इदं एव शिवं अयं एव शिवः।
शिव-शासनतः शिव-शासनतः
शिव-शासनतः शिव-शासनतः।।

86. एवं विधं गुरुं ज्ञात्वा ज्ञानं उत्पद्यते स्वयम्।
तदा गुरूपदेशेन मुक्तोहं इति भावयेत्।।

87. गुरुणा दर्शितैर् मार्गैः मनः शुद्धं तु कारयेत्।
अनित्यं खण्डयेत् सर्वं यत् किंञ्चित् ध्यान-गोचरम्।।

88. ज्ञेयं सर्वं अनित्यं च ज्ञानं चामन उच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं समं कुर्यात् सद् गुरोर् उपदेशतः।।

89. चैतन्यं शाश्वतं शांतं व्योमातीतं निरंजनम्।
नाद-बिन्दु-कलातीतं तं गुरुं प्रणमाम्यहम्।।

90. स्थावरं निर्मलं शांतं जंगमं स्थिरं एव च।
व्याप्तं येन जगत् सर्वं तस्मै श्री गुरवे नमः।।

91. ज्ञान-शक्ति-समारूढं तत्व-माला-विभूषितम्।
भुक्ति-मुक्ति-प्रदातारं तं गुरुं प्रणमाम्यहम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

92. अनेक-जन्म-संप्राप्त-कर्म-बन्ध-विदाहिने।
ज्ञानानल-प्रभावेन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

93. न गुरोर् अधिकं तत्वं न गुरोर् अधिकं तपः।
तत्व-ज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।।

94. मन् नाथः श्रीजगन् नाथो मद् गुरुः श्री जगद् गुरुः।
स्वात्मैव सर्व-भूतात्मा तस्मै श्री गुरवे नमः।।

95. गुरुर् आदिर् अनादिश्च गुरुः परम-दैवतं।
गुरोः-परतरं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः।।

96. ध्यान-मूलं गुरोः मूर्तिः पूजा-मूलं गुरोः पदं।
मन्त्र-मूलं गुरोः वाक्यं मोक्ष-मूलं गुरोः कृपा।।

97. सप्त-सागर-पर्यन्तं तीर्थ-स्नान-फलं परं।
गुरोर् अंघ्रि-जल-बिन्दोः सहस्त्रांश-समं मतम्।।

98. गुरुर् एव जगत् सर्वं ब्रह्म-विष्णु-शिवात्मकं।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात् संपूजयेद् गुरुम्।।

99. ज्ञानं विना मुक्ति-पदं लभ्यते गुरु-भक्तितः।
गुरु-तुल्यः यतो नान्यः साधयेद् गुरुं मार्गतः।।

100. एवं ज्ञात्वा महादेवि गुरोः निन्दां करोति यः।
स याति नरकान् घोरान् यावत् चन्द्र-दिवाकरौ।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

101. गुशब्दस्तु गुणातीतो रूपातीतो रुकारकः।
गुण-रूप-विहीनत्वाद् गुरुर् इत्यभिधीयते।।

102. करुणा-खड्ग पातेन छेत्ता स्व-शिष्य-पाशकान्।
सम्यग् आनन्द-जनकः सद् गुरुः सोभिधीयते।।

103. यावत् जीवेद् अयं जीवो गुरुं तावत् सदा स्मरेत्।
गुरु-लोपो न कर्तव्यः स्वच्छन्दो यदि वा भवेत्।।

104. हुंकारेण न वक्तव्यं असत्यं वा कदाचन।
न स्थातव्यं गुरोर् अग्रे धृष्ट-रूपेण वा क्वचित्।।

105. गुरुं त्वंकृत्य हुंकृत्य जयेच्छो यो विवादकः।
अरण्ये निर्जले देशे स भवेद् ब्रह्म-राक्षसः।।

106. मुनिभिः पन्नगैर् वापि सुरैर् वा शपितो यदि।
काल-मृत्यु-भयाद् वापि गुरुः रक्षति पार्वति।।

107. अशक्ताः हि सुराद्याश्च ह्यशक्ताः मुनयस् तथा।
गुरु-शापेन ते क्षीणाः क्षयं यान्ति न संशयः।।

108. श्रुति-स्मृति-तत्व-ज्ञानं प्राप्नोति गुरु-सेवया।
ते वै संन्यासिनः प्रोक्ता इतरे वेश-धारिणः।।

109. यत्रैव तिष्ठति सोपि स देशः पुण्य-भाजनम्।
मुक्तस्य लक्षणं देवि तवाग्रे कथितं मया।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

110. मन्त्रराजं इदं देवि गुरुर् इत्यऽक्षर-द्वयम्।
स्मृति-वेदार्थ-वाक्यानां गुरुः साक्षात् परं पदम्।।

111. नित्यं ब्रह्म निराकारं निर्गुणं बोधयेत् परम्।
पूर्णं ब्रह्म निराभासं दीपो दीपान्तराद् यथा।।

112. गुरोः कृपा-प्रसादेन ह्यात्मारामं निरीक्षयेत्।
अनेन मुक्ति-मार्गेण स्वात्म-ज्ञानं प्रवर्तते।।

113. आब्रह्मस्तम्भ-पर्यन्तं परमात्म-स्वरूपकम्।
स्थावरं जंगमं सर्वं प्रणमामि जगद् गुरुम्।।

114. वन्देहं सत् चिद् आनन्दं भेदातीतं गुरोः पदम्।
नित्यं पूर्णं निराभासं निर्गुणं स्वात्म-संस्थितम्।।

115. परात् परतरं ध्येयं नित्यं आनन्द-कारकम्।
हृदयाकाश-मध्यस्थं शुद्ध-स्फटिक-सन्निभम्।।

116. स्फाटिके प्रतिमा-रूपं दृश्यते दर्पणे यथा।
तथात्मानं चिद् आकाशे संस्मरेत् सोहं इत्युत।।

117. अंगुष्ठ-मात्रं पुरुषं ध्यायेत् च चिन्मयं हृदि।
तत्र स्फुरति भावो यः शृणु तं कथ्याम्यहम्।।

118. अजोहं अजरं नित्यं अनादिं नित्यतां गतं।
अविकारं चिदानन्दं प्रणयात् तं स्मराम्यहम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

119. अपूर्वानन्द-दं नित्यं स्वयं-ज्योतिर् निरामयम्।
विरजस्कं परं शम्भुं आनन्दं परं अव्ययम्।।

120. अगोचरं तथागम्यं नाम-रूपादि-वर्जितम्।
निःशब्दं तं विजानीयात् स्वभावं ब्रह्म पार्वति।।

121. यथा निज-स्वभावेन कर्पूर-कुसुमादिषु।
शीतोष्णादि स्वभावश्च तथा ब्रह्म च शाश्वतम्।।

122. स्वयं तथाविधो भूत्वा स्थातव्यं यत्रकुत्रचित्।
कीटो भृङ्ग इव ध्यानाद् यथा भवति तादृशः।।

123. किं अत्र बहुनोक्तेन शास्त्र-कोटि-शतेन च।
दुर्लभा चित्त-विश्रान्तिः सद् गुरोः करुणां विना।।

124. निमेषार्धार्ध-पातेन यद् वाक्याद् वै विलोक्यते।
स्वात्मा च स्थैर्यं आदत्ते तस्मै श्री गुरवे नमः।।

125. गुरु-ध्याने सदा सक्तो देही ब्रह्ममयो भवेत्।
पिण्डे पदे तथा रूपे मुक्तोसौ नात्र संशयः।।

126. स्वयं सर्वमयो भूत्वा तत् पदं चावलोकयेत्।
परात् परतरं नान्यत् सर्वं एव निरामयम्।।

127. तस्यावलोकनाद् एव सर्व-सङ्ग-विवर्जितः।
एकाकी निस्पृहः शान्तः तिष्ठेत् तस्य प्रसादतः।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

128. लब्धं वापि अथवा अलब्धं अल्पं वा बहुलं तथा।
निष्कामैर् एव भोक्तव्यं सदा सन्तुष्ट-मानसैः।।

129. सर्वज्ञ-पदं इत्याहुः देही सर्वमयो हि सः।
सदा शान्तः सदानन्दो रमते यत्रकुत्रचित्।।

130. स्वकुलाकुल-कोटींश्च तारयेत् सोपि तत् क्षणात्।
अतस्तं सद् गुरुं ज्ञात्वा त्रिकालं अभिवन्दयेत्।।

131. साष्टांग-प्राणिपातेन स्तुवन् नित्यं गुरुं भजेत्।
भजनात् स्थैर्यं आप्नोति स्व-स्वरूपमयो भवेत्।।

132. शिवे रुष्टे गुरुस् त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।
लब्ध्वा कुल-गुरुं सम्यग् गुरोः सेवां समाचरेत्।।

133. मधु-लुब्धो यथा भृंगः पुष्पात् पुष्पान्तरं व्रजेत्।
ज्ञान-लुब्धस् तथा शिष्यो गुरोः गुर्वन्तरं व्रजेत्।।

134. ज्ञान-हीनो गुरुस् त्याज्यो मिथ्या-वादी हि दाम्भिकः।
स्व-विश्रान्तिं न जानाति परान् विश्रान्तयेत् कथम् ?

135. शिलायां किं परं पारं? शिला-संगं परित्यजेत्।
स्वयं तीर्णो भवेत् नासौ परं निस्तारयेत् कथम् ?

136. न वन्दनीयाः कष्टेपि दर्शने भ्रान्ति-कारकाः।
गुरवः वर्जनीयाः स्युः सुशिष्यैः सन्मताश्रयैः।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

137. शिष्यस्तु नात्र हे देवि प्रशंस्यो येन-केन-चित्।
सोपि ज्ञानं अवाप्नोति भक्त्या परमया गुरोः।।

138. गूढ़ाः दृढाश्च भक्ताश्च मौन-व्रत-परायणाः।
सदा-संत्यक्त-कामाश्च पंचधा गुरवो मताः।।

139. श्रीगुरोः पादुकां मुद्रां मुख-मन्त्रं च गोपयेत्।
गुरोः कृपार्जितं सम्यग् वस्तु अभीष्ट-करं सदा।।

140. गुरु-त्यागाद् भवेत् मृत्युः मन्त्र-त्यागाद् दरिद्रता।
गुरु-मंत्र-परित्यागी रौरवं नरकं व्रजेत्।।

141. पाखण्डिनः पापरताः नास्तिकाः भेदबुद्धयः।
स्त्रीलम्पटाः दुराचाराः कृतघ्नाः बक-वृत्तयः।।

142. कर्म-भ्रष्टाः क्षमा-हीनाः निन्दकास् तर्क-वादिनः।
कामिनः क्रोधिनश्चैव हिंसकाश्च शठास्तथा।।

143. त एते गुरुभिस् त्याज्याः सर्व-धर्म-बहिष्कृताः।
ज्ञानं शिष्याय दातव्यं सदा पाप-विरोधिने।।

144. सत् शिष्यैः गुरवः सेव्या ऐक्य-भक्त्या विचार्य च।
न यावद् गुरु-कारुण्यं लभेन्न मोक्ष कारणम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

145. गकारस्तु शिवः प्रोक्त उकारो ब्रह्म चोच्यते।
रुकारस्तु रविः प्रोक्तो गुरुः सर्वार्थ-कोविदः।।

146. महतां चैव भूतानां प्रलये सम् उपस्थिते।
स्वतन्त्रस्तु शिवो भूत्वा सम्पूर्णो भवति महान्।।

147. उपदेशो ह्ययं देवि गुरु-मार्गेण मुक्तिदः।
गुरु-भक्तिस् तथा ध्यानं सकलं तव कीर्तितम्।।

148. ध्यात्वा प्रत्यक्षं एवैतद् भजामि च वदामि च।
लोकोपकारकं देवि गुरुं अभ्यर्चयेत् सदा।।

149. नतास्म ते नाथ ! पदारविन्दं
बुद्धीन्द्रिय-प्राण-मनो-वचोभिः।
यैः चिन्त्यते तद् हृदिभाव-युक्तैर्
मुमुक्षुभिः कर्म-फल-विपाकात्।।

150. ज्ञान-प्रकाशं विभवेष्ट-दोहं
स्मराम्यहं देव-पदाब्ज-द्वन्द्वम्।
अत्यन्त-विज्ञान-मयं विशुद्धं
गुरुं चिदानन्द-घनं भजामि।।

श्री पार्वती उवाच

151. पिंडं तु किं महादेव पदं किं समुदाहृतम् ?
रूपातीतं तु यद् रूपं तत् त्वं आख्याहि शंकर।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

श्री शिव उवाच

152. पिंडं कुंडलिनी शक्तिः पदं हंस उदाहृतः।
रूपं बिन्दुर् इति ज्ञेयं रूपातीतो निरञ्जनः।।

153. लौकिकस्तु गुरुर् भाति भक्त्यर्थे हि परस्तु यः।
ज्ञानेन भावयेत् सर्वं कर्म निष्काम-कार्यतः।।

154. यद्यप्यऽधीताः निगमाः षडंगाः सागमाः प्रिये।
अध्यात्मादीनि शास्त्रानि ज्ञानं नास्ति गुरुं विना।।

155. निरस्य सर्वसन्देहं एकीकृत्य च दर्शनम्।
तपस्यन्तं रहस्यस्थं भजामि गुरुं ईश्वरम्।।

156. लौकिकात् कर्मणो याति न हि तत् परमं पदम्।
ज्ञानं च भावयेत् सर्वं कर्म निष्काम-काम्यतः।।

157. गुरुगीतां इमां देवि गुरोस् तत्वार्थ-बोधिकाम्।
भव-व्याधि-विनाशाय स्वयं एव जपेत् सदा।।

158. श्रीगीता भक्ति-भावेन पठ्यते श्रूयतेथवा।
लिखित्वा च प्रदानेन कामना सफला भवेत्।।

159. गुरोः गीताक्षरैः बद्धं मन्त्र-राजं इमं जपेत्
अन्ये च विविधाः मन्त्राः कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

160. सर्व-पाप-समूहघ्नं सर्व-दारिद्र्य-वारकम्।
काले मृत्यु-भय-हरं सर्व-संकट-नाशकम्।।

161. यक्ष-राक्षस-भूतघ्नं चौर-व्याघ्र-भयापहम्।
महा-व्याधि-हरं चैव सर्वोपद्रव-नाशकम्।।

162. सर्व-दुर्भिक्ष-शमनं महारोग-निवारकम्।
यत्फलं गुरु-सान्निध्यात्तत्फलं पठनाद् भवेत्।।

163. अनन्तफलं आप्नोति गुरुगीता-जपेन हि।
श्रेयसे पठतो जन्तोर् विभूतिः सर्वदा भवेत्।।

164. कुशाजिनास्तृतासने निश्चले निर्मले शुभे।
उपविश्य समं काये जपेद् एकाग्र-मानसः।।

165. ध्येयं शुक्ले च शांत्यर्थं वशे रक्तासनं प्रिये।
अभिचारे कृष्णवर्णं पीतवर्णं धनागमे।।

166. शान्त्यायुत्तरतः जाप्यं वशे पूर्व-मुखोदितम्।
दक्षिणे मारणं प्रोक्तं स्तम्भनं पश्चिमे मुखे।।

167. मुक्तिदं सर्व-भूतानां बन्ध-मोक्ष-करं परम्।
सर्व-सौख्यकरं नृणां गुरुभ्यो भक्ति-वर्धनम्।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

168. दुष्कर्म-नाशकं चैव सुकर्म-सिद्धिदं तथा।
असिद्धं साधयेत् सर्वं नव-ग्रह-भयापहम्।।

169. दुःस्वप्न-नाशकं चैव सुस्वप्न-फल-दायकम्।
सर्व-शान्ति-करं नित्यं वन्ध्यादिष्वपि पुत्रदम्।।

170. अवैधव्य-करं स्त्रीणां सौभाग्य-जननं सदा।
आयुर् आरोग्यं ऐश्वर्य-पुत्र-पौत्र-विवर्धनम्।।

171. रोगं दुःखं भयं विघ्नं विनाश्य सुख-कारकम्।
सर्व-बाधा-प्रशमनं धर्मार्थ-काम-मोक्षदम्।।

172. यद् यत् कामयते कर्मी तत् तद् आप्नोति निश्चितम्।
कामदं कामधेनुश्च कल्पितं कल्पवृक्षकम्।।

173. चिन्तामणिं चिन्तितस्य सर्व-मंगल-दायकम्।
लिखित्वा दापयेद् देवि श्रेयः परं अवाप्नुयात्।।

174. कामेन जपते यो वै तस्य काम-फल-प्रदम्।
यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम्।।

175. जपन्ते शाक्त-सौराश्च शैव-गाणेश-वैष्णवाः।
सर्वेभ्यो सिद्धिदं देवि सत्यं सत्यं न संशयः।।

176. अथ काम्य-जप-स्थानं कथयामि वरानने।
सागरान्ते नदी-तीरे तीर्थे हरि-हरालये।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

177. शक्तिदेवालये गोष्ठे सर्वदेवालये शुभे।
वटस्य धात्र्याः मूले वा तथा वृन्दावनेपि वा।।

178. पवित्रे निर्मले स्थाने नित्यानुष्ठानकेपि वा।
समाहितेन मौनेन जपं एतत् समारभेत्।।

179. जपेन फलं आप्नोति ह्यश्वमेध-शतस्य च।
सिद्ध्यन्ति सर्व-कार्याणि जन्म-साफल्य-हेतवे।।

180. संसार-मल-नाशाय भव-पाश-निवृत्तये।
गुरुगीताम्भसि स्नानं कर्तव्यं साधकैः सदा।।

181. स्थानानि तानि सर्वाणि पवित्राणि न संशयः।
गुरवः यत्र तिष्ठन्ति सद्-असद्-ब्रह्मवित्तमाः।।

182. स्मर्तव्यः सर्वदा भक्त्या गुरुः शिष्येण धीमता।
यस्य स्मरणमात्रेण पुनर् जन्म न विद्यते।।

183. स एव सर्वसंपत्ति तस्मात्संपूजयेद् गुरुं।
गुरोस् तीर्थे वसेत् नित्यं सर्वत्र सुख-भाग् भवेत्।।

184. समुद्रस्य यथा तोयं क्षीरे क्षीरं जले जलम्।
कुम्भे कुम्भे यथाकाशः यथात्मा परमात्मनि।।

185. यथा ज्ञानेन जीवात्मा परमात्मनि वै तथा।
ऐक्येन रमते ज्ञानी गुरुगीता-जपेन हि।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

186. गुरुगीता-समं नान्यत् नान्यत् तत्त्वं गुरोः परम्।
गुरोः परतरं नान्यत् सत्यं उक्तं वरानने।।

187. अनेक-जन्म-विहिताः यज्ञ-दान-तप-क्रियाः।
सर्वाः सफलतां यान्ति गुरोः सन्तोष-मात्रतः।।

188. इदं रहस्यं परमं तवाग्रे कथितं मया।
देयं सुगोप्यं शिष्याय गुरु-सेवारताय वै।।

189. अतीव-बुद्धि-प्राचुर्य-गुरु-भक्तिमते सते।
मन्त्र-राजं इदं गुह्यं दातव्यं केवलं प्रिये।।

190. गुरु-मन्त्रं मुखे यस्य तस्य सिद्धिर् भवेद् ध्रुवं।
दीक्षया सर्वकर्माणि सिद्ध्यन्ति गुरुपुत्रके।।

191. गुरु-भावः परं तीर्थं अन्यतीर्थं निरर्थकम्।
तेनैव मुच्यते शिष्यो घोर-संसार-बन्धनात्।।

192. विद्या धनं बलं दानं भाग्यं तेषां निरर्थकम्।
सर्वदा ये न कुर्वन्ति गुरु-सेवां वरानने।।

193. गुरवो बहवः सन्ति शिष्य-वित्तापहारकाः।
स गुरुः दुर्लभो देवि शिष्य-सन्ताप-हारकः।।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

194. यस्य प्रसादात् अहं एव सर्वं
मयैव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं-
तस्यांघ्रि-पद्मं प्रणतोस्मि नित्यम्।।

195 संसार-सागर-समुद्धरणैक-मन्त्रं
ब्रह्मादि-देव-मुनि-पूजित-सिद्धमन्त्रम।
दारिद्रय-दुःख-भय-शोक-विनाश-मन्त्रं
वन्दे महाभय-हरं गुरुराज-मन्त्रम्।।

संशोधक
प्रो. जानकी नाथ शर्मा

समापन

1. त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।

तुम ही हो माता, पिता तुमही हो, तुमही हो बन्धु सखा तुम्ही हो।
तुम ही हो विद्या और धन भी तुम हो, हे देव सम्राट् सब कुछ तुम ही हो।।

2. या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।

जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मीरूप से, पापियों के यहां दरिद्रतारूप से, शुद्ध अन्तः करण वाले पुरुषों के हृदय में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जा रूप से निवास करती है, उन आप भगवती दुर्गा को हम नमस्कार करते हैं। हे देवि! सम्पूर्ण विश्व का पालन कीजिये।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

3. **सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये! शिवे! सर्वार्थसाधिके!। शरण्ये! त्र्यम्बके! गौरि! नारायणि! नमोऽस्तु ते।।**

हे नारायणी! तुम सब प्रकार का मंगल प्रदान करने वाली मंगलमयी हो, कल्याणदायिनी हो। सब पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली हो, शरणागतवत्सला हो, तीन नेत्रोंवाली हो, तुम गौरी हो, हे नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार हो।

4. **शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि! नारायणि नमोऽस्तु ते।।**

शरण में आये हुए दीनों एवं पीड़ितों की रक्षा में संलग्न रहने वाली तथा सबकी पीड़ा दूर करने वाली नारायणी देवी! तुम्हें नमस्कार है।

5. **माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शाम्भवी। शक्तिः शंकरवल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी माता कुमारीत्यसि।।**

माया (स्वतंत्र शक्ति), कुण्डलिनी (मूलाधार शक्ति), क्रिया शक्ति, मधुमती (आनन्द शक्ति), काली (सृष्टि, स्थिति, संहार शक्ति), कला (अमृतमय अमा कला), मालिनी (वर्णमाला शक्ति), मातंगी (ऋषि मातंग की कन्या), विजया (जय रूप) भगवती (सर्व ऐश्वर्यमयी), देवी (क्रीडनशील), शिवा (कल्याण रूप), शाम्भवी (शम्भु की अभिन्न शक्ति), शंकरवल्लभा (शंकर की प्रिया), त्रिनयना (तीन नेत्रों वाली), वाग्वादिनी (वाणी रूप विमर्शमय), भैरवी (भैरव की शक्ति), ह्रींकारी (ह्रींकार रूप), (इडा, पिंगला सुषम्ना रूप) स्थूल सूक्ष्म रूप, जगत जननी, भेद को नष्ट करने वाली, इन भिन्न भिन्न नामों को धारण करने वाली एक तुम ही हो।

6. **कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।**

कर्पूर सदृश सफेद वर्ण वाले, करुणा के अवतार, संसार के साररूप, माला के रूप में साँप को धारण करने वाले, मेरे हृदय रूपी कमल पर सदा विराजमान शक्ति को सदा संग रखने वाले आप को मेरा प्रणाम है।

7. **आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः। संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।**

हे शम्भो! मेरी आत्मा आप हैं, बुद्धि पार्वतीजी हैं, प्राण आपके गण हैं, शरीर आपका मन्दिर है, सम्पूर्ण विषय भोगों की रचना आपकी पूजा है, निद्रा समाधि है, मेरा चलना फिरना आपकी परिक्रमा है, तथा सम्पूर्ण शब्द आपके स्तोत्र हैं, इस प्रकार मैं जो-जो भी कर्म करता हूँ, वह सब आपकी ही आराधना है।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

8. ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं भावातीतं त्रिगुणरहितं सदगुरुं तं नमामि।।

ब्रह्मानन्द रूपी परमसुख को प्रदान करने वाले, स्वयं केवल ज्ञान की मूर्ति हैं, द्वन्द्वों (सुख दुःखादि द्वन्द्वों) से परे, आकाश समान सर्व व्यापक, जिनका लक्ष्य केवल वह तत्व है, जो अद्वितीय हैं, नित्य (अजर अमर) हैं, निर्मल और अचल हैं और जो सबों की बुद्धि के साक्षी हैं, ऐसे भावातीत, त्रिगुणातीत उस सद्गुरु को मेरा प्रणाम हैं।

9. आवाहनं न जानामि नैव जानामि पूजनं पूजापाठं न जानामि क्षभ्यतां परमेश्वर।।

हे परमेश्वर! आपका आवाहन, पूजन तथा पूजा-पाठ कैसे करना चाहिए इन सब से मैं अनभिज्ञ हूँ। अतः आप मुझे क्षमा करना।

10. उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसोरुसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः।।

दोनों हाथों से, दोनों जांघों से, सिर से, वक्ष से, वचन से और मन से मैं आपको साष्टांग प्रणाम करता हूँ।

11. असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय।

हे ईश्वर! हम असत् की ओर नहीं, वरन सत् की ओर, अन्धकार की ओर नहीं, वरन् प्रकाश (ज्ञान) की ओर, मृत्यु की ओर नहीं, वरन् अमरत्व की ओर अग्रसर हों।

12. ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येम-अक्षभिः-यजत्राः।।
स्थिरैः-अङ्गैः-तुष्टवाँसः-तनूभिः व्यशेम देवहितं यदायुः।।
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरष्टिनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

हे देवगण! हम भगवान का यजन (आराधन) करते हुए कानों से कल्याणमय वचन सुनें, नेत्रों से कल्याण ही देखें, सुदृढ़ अंगों एवं शरीर से भगवान की स्तुति करते हुए हम लोग, जो आयु परमात्मा के काम आ सके, उसका उपभोग करें, सब ओर फैले हुए सुयश वाले इन्द्र देव हमारे लिये कल्याण का पोषण करें, सम्पूर्ण विश्व का ज्ञान रखने वाले पूषा हमारे लिये कल्याण का पोषण करें, अरिष्टों को मिटाने के लिये चक्र सदृश शक्तिशाली गरुड़देव हमारे लिये कल्याण का पोषण करें, तथा बुद्धि के स्वामी बृहस्पतिजी भी हमारे लिये कल्याण की पुष्टि करें।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

3. ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वगुं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

हे परमात्मन्! द्युलोक, अन्तरिक्ष लोक, पृथिवी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, विश्वदेव तथा ब्रह्म ये हमारी अष्टप्रकृतियां हमारे लिये शान्ति देने वाली हों। मेरे लिये सर्वत्र शान्ति विद्यमान रहे। सब जगह शान्ति तथा शान्ति का साम्राज्य रहे, इस प्रकार की शान्ति मुझे वर्धमान होती रहे।

ॐ शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!
त्रिविध (आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक) तापों की शान्ति हो!

अनुवादक
श्री प्रेमनाथ साधु

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जै जै विश्वमबरम

सतग्वरुँ नादन कन थावुम
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

टाठि बब नादन कन थावुम
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

पोशान छस नें सऽ पादर सिहस
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

मन गौछुम रोजुन सावधान
हर दम रोजुन तुहुन्दुय ध्यान

छुम नुं रोजान मन निशि पानस
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

पूज़ा करिन येलि छस बिहान
मन छुम कौत कौत नीरिथ गछान

रास रठ सऽ मनुंची निशि पानस
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

कण्ठस प्यठ येलि वातनम प्राण
मन म्योंन थाऽविज़्यन साविधान

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

यिनुं साऽ ज़न्म गछ़िम ज़ायि थावम सऽ हयस
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

यरिलूकुक च्ठ सऽ मायायि ज़ाल
परिलूकस तारिम हावतम सऽ कमाल

गरि गरि रोज़तम सऽ साहितस
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

टाठि बबॅ रोज़तम में साहितस
मन म्योंन अनतन सऽ कोबूहस

- रानी कौल

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

हमारा अहोभाग्य है कि श्री गुरुमहाराज की कृपा-दृष्टि, हमें अपने सीधे-साधे व्यवहार तथा भोलेपन से स्वतः प्राप्त है।

इस संकलन के लिए हम निम्नलिखित महानुभावों का आभार प्रकट करते हैं।

श्री जानकीनाथ कौल 'कमल'
प्रो. मक्खन लाल कुकिलू
प्रो. जानकीनाथ शर्मा
श्री प्रेमनाथ साधु
प्रो. ओंकार नाथ चंगू
श्री कपिल रैणा

प्रकाशक

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्राप्तिस्थान-
भगवान् गोपीनाथ जी आश्रम, उदयवाला, बोड़ी, जम्मू।
भगवान् गोपीनाथ जी आश्रम, पम्पोश, ग्रेटर कैलाश–एक,
नई दिल्ली–48.

मूल्य = 5 रु.
मुद्रक :

अत्यन्त सौहार्द तथा विनम्रता से

प्राण नाथ कौल,
दासानुदास

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com